सं.मो.बि./एफ. डी./3-84/8787.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ एसोसियेटिड इन्जीनियरिंग इन्डस्ट्रीज, 17/3, मयुरा रोड़, फरीदाबाद के अमिक श्री चेत सिंह तथा इसके प्रवन्त्रकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोशिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का श्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहले हुए ग्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की खारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेरू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों सवा श्रमिक के बीच या सो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री चेत सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं. ग्रो.बि./एफ.डी/18-84/8794.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं. जे. पी. इन्डस्ट्रीज, 18-ए/6, डी.एल. एफ. ऐरिया, फरीदाबाद के श्रमिक श्री हीरा सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विदाद है;

मौर वृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्वय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रब, भोधौगिक विवाद अधिनियम, 1947, की श्वारा 10 की उपश्वारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा के प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3- अम-68/15254, विनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी.-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की श्वारा 7 के प्रश्लीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री हीरा सिंह की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./एफ. डी./4-84/8801.—चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ० एसोसियेटिड इन्जीनिरिंग इन्डस्ट्री, 17/3 मयुरा रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री श्रीम प्रकाश तथा उसके श्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रन, भीकोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की छपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/152\$4, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहले हुए अधिसूचना सं० 1145-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित थम न्यायालय, फरीदाबाद, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रक्रमधकों तथा अभिक्त के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रीम प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 2 मार्च, 1984

सं. श्रो.वि./हिसार/138-83/9091.—-वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. हिसार टैक्सटाईल मिल्ज, हिसार, के श्रमिक श्री हरनाम दास तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर प्कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, भ्रब, भीद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा भ्रदान की गई मिनतयों का भ्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी भ्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.भ्रो. (ई)श्रम 70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा स्वत भ्रधिनियम

की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री हरनाम दास की सेवाओं का समापनं न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./ग्रम्वाला / 54-84/9098.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं. ग्रम्बाला सँन्ट्रल को-ग्राप्नेटिव

ब्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की अपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिल्सिनों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उसते मिश्रम् ना की ग्रारा 7 के ग्रशीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखामामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथना सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री दर्शन लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. द्यो.वि./एफ.डी./21-84/9104.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० राजदीप इन्डस्ट्रीज, डी. एल. एफ. ऐरिया, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विश्व नाथ शाह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रौद्योगिक विवाद है;

्रग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिन्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, मब, मौद्योगिक विवाद मिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई र्म सिन्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिस्चिना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए मिस्चिना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त मिस्चिना की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, परीदाबाद को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रम्बा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विश्व नाथ शाह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./7-84/9111.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० पलोवेल प्रा॰लि०, 13/1, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री धर्म चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

मीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिणं य हेतु निदिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिप्तिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपोल इसके द्वारा सरकारी ग्रिप्तिस्चना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की घारा 7 के श्रद्यीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री धर्म चन्द की सेवाध्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?